रिकॉर्ड :– रात के राही थक मत जाना.... ॐ पिताश्री 1/12/62
ओमशान्ति। यह कौन (कह रहा) है .....रात के राही थक मत जान; क्योंकि रास्ता थोड़ा ..... खत्म करना ही है। आत्माओं की जो ज्योत है वो भी ठण्डी हो गई है। बाकी थोड़ा ..... ऐसे नहीं कहेंगे कि 100% ज्योत बुझ जाती है। ऐसा ..... कोई मरते हैं तो आत्मा के लिए दीवा जगाते हैं। समझते हैं नहीं ..... इसलिए दीवा जलाते हैं। अब आत्मा का दीवा ... बुझ गया है; क्योंकि ज्ञान घृत ठीक नहीं है। योगबल, ज्ञान घृत का बल होगा तो सोझरा (क)रेंगे, औ(रों) को सोझरा देते रहेंगे। बाप कहते हैं (इस) समय ज्ञान घृत की बिल्कुल दरकार है। योग तो ठीक, बाबा से (शक्ति) मिलती है, विकर्म विनाश होते हैं; परन्तु ज्ञान घृत ज़रूर चाहिए, जि(स)से तुम दिन (स)तयुग में जाकर अच्छा पद पावेंगे। आत्मा की ज्योत अच्छी प्रज्वलित हो जावेगी। इसलिए मेरे को याद करने में थक वा भूल मत जाओ। तुम बच्चे ... जानते हो बाबा नॉलेजफुल, जानी–जाननहार है। (सदै)व मनुष्य भी कहते हैं, क्या होने का है ..... खुदा भगवान जाने। अभी भी बहुत आफतें आनी हैं। कहेंगे, क्या होने वाला है सो तो खुदा जाने। ज़रूर वो नॉलेजफुल, जानी–जाननहार है, तभी तो गायन होता है। क्या होने वाला है सो तुम अभी उन (द्वारा) जान गए हो। भगवान तुम बच्चों को समझाते हैं कि अभी क्या होने वाला है। यह बात है ही गीता में, जो अभी समझाते हैं। मनुष्य तो भूल गए हैं। बरोबर (गी)ता में भी है– अनेक धर्मों का विनाश, एक धर्म की स्थापना। गीता के समय ही विनाश का भी वर्णन है। और कोई भी वेद–शास्त्र .....भारी लड़ाई का वर्णन न है। इनका कनेक्शन है ही गीता के समय। महाभारी लड़ाई ....। इसका नाम ही है महाभारत वर्ल्ड वार। समझते हैं यह महाभारी लड़ाई है; क्योंकि मोस्ट इन्वेंट हुई है। गीता में भी है भगवानुवाच्य। तो बरोबर भगवान नॉलेजफुल है। उसने ही बच्चों को समझाया है। अब भी (स)मझा रहा हूँ कि क्या होने वाला है। गीता में है बरोबर, स्थापना का सा॰ भी किया था। रिफर करते हैं ना। कोई2 बातें ठीक हैं। ऋषि–मुनि–सन्यासियों से भी पहले जो थे वो पवित्र आत्माएँ थीं। कुछ जानती थीं। मनुष्य तो कहते हैं वो त्रिकालदर्शी थे। इसलिए उन्होंने शास्त्र बनाए। पास्ट जो हो गया सो उन्होंने (वो) देखा नहीं; परन्तु कुछ विशाल बुद्धि थे। ड्रामा अनुसार शास्त्रों की रचना भी होनी थी। तो उन्होंने (बै)ठ शास्त्र बनाए; परन्तु वो नाम–रूप, देश–काल तो मिल न सके। यह ज्ञान तो प्रायःलोप हो जाता है। (उ)न्होंने जो देखा– ल॰ना॰, राम–सीता आदि के मंदिर हैं तो ज़रूर उनकी कहानी चाहिए। न तो इस पर बैठ ...जाए हैं। बाकी पूरे त्रिकालदर्शी, आदि–मध्य–अन्त को जानने वाले तो नहीं हैं। कहते भी हैं बेअन्त है। हम नहीं जानते। तो भी शास्त्र ड्रामा अनुसार बनाए हैं। यह वेद–ग्रंथ–शास्त्र,गीता आदि यह सभी है भक्तिमार्ग का सामान। यह ड्रामा में पहले से ही बना हुआ है। यह कौन समझाते हैं? जो जानी–जाननहार है। अभी हम ऐसे नहीं कहते कि भगवान जाने। हम कोई भी बात बाबा से झट पूछ सकते हैं और बाबा बता सकते हैं। वो तो कहेंगे, पता नहीं किसकी विजय होगी, क्या होगा भगवान जाने। हम ऐसे नहीं कहेंगे। बाबा समझाते हैं गीता में बरोबर राज्य योग है। विनाश का भी होना है, राजाओं का राजा भी बनना है। नर से ना॰ बनते हैं। कौन–सी राजधानी स्थापन होनी है वो भी बताते हैं। गीता ... में भल है; परन्तु (वो) राज्य योग सिखलावे कौन? अभी तो वो ही संगम का समय है। बाप बैठ समझाते हैं। आगे हम भी (क)हते थे, भगवान जाने पता नहीं क्या होना है। बरोबर हम स्वर्ग को भी याद करते आते हैं। होकर आए हैं तभी ... याद करते हैं। समझ में आता है बरोबर गीता द्वारा ही विनाश हुआ था, जो अर्जुन को भी दिखाया और नर से ना॰ बनने का चतुर्भुज का भी सा॰ कराते (थे)। अभी हमारी बुद्धि में सभी बातें ..... पर हैं।

(बा)प ने समझाया है तो हम पुरुषार्थ भी कल्प पहले मुआफिक कर रहे हैं। हम जान गए है। बाबा नॉलेजफूल जानी–(जा)ननहार है। जो होने वाला है उनका सा॰ भी हमको कराया है। बाकी ऐसे तो नहीं बतावेंगे फलाणे का ऐसा ....गा। अपन को सारी तात है ही पद की। अपने पढ़ाई की। हमारा काम है योग में रहना और ज्ञान की धारणा (क)र और कराना; क्योंकि हम जानते हैं जितना समय बाबा के साथ रहेंगे–पढ़ेंगे तो अवस्था परिपक्व होती (जा)वेगी। अभी तो अजन पूरी स्थापना हुई न है। कच्ची कलियाँ हैं, फूल बनना है तो हम ऐसे नहीं कहेंगे .... विनाश हो। भल जानते हैं दुख है, आफतें हैं, वो सभी देखना पड़ेगा; परन्तु फिर भी हम बाबा के (सा)थ हैं। वो हमको पढ़ाते हैं। भगवान हमको बतलाते हैं कि क्या होना है। 5000 बरस पहले क्या हुआ (था)। थोड़े समय में ऐसे भी गीत बन जावेंगे जो कहेंगे कि 5000 बरस पहले जो हुआ था सो अभी हो रहा... । स्वर्ग की स्थापना हो रही है। भारत को हम बहुत अच्छा शुभ संदेश देते हैं। भारत जो अभी महान (दु)खी है, कंगाल है, कल महान सुखी होने वाला है। रात के बाद दिन आना है। अभी बरोबर कलियुग है। (अ)नेक धर्मों का झगड़ा कितना भारी है। मूसल भी बरोबर निकले हुए हैं। सारे ड्रामा में मूसलों की लड़ाई सिर्फ कलियुग के अन्त में ही होती है। यह निशानी है कलियुग अन्त की। ऐटॉमिक बॉम्ब्स से ही (म)हाभारी लड़ाई हुई थी। ट्राइल भी हुई है, बॉम्ब्स गिरते हैं तो शहर खलास हो जाते हैं। अभी पदमों ... खर्चा कर बनाए हैं सो फालतू समुद्र में फेंक तो नहीं देंगे वा रख तो नहीं देंगे। यह तो काम में (आ)ने वाली चीज़ हैं। बन्दूक, बाण आदि जो भी बनते हैं वो लड़ाई के लिए। सतयुग–त्रेता में ऐसी चीज़ें नहीं होतीं, न कोई वर्णन है। यह तो इन विद्वानों आदि ने उल्टा बताया है कि वहाँ भी यह कंस–(ज)रासिंधी आदि थे। अभी गॉड तो है नॉलेजफुल। चेतन बीजरूप है तो ज़रूर उसमें नॉलेज होगी। (जै)से आत्मा में संस्कार रहते हैं उस अनुसार आकर जन्म लेती है। बाबा में भी संस्कार गाए जाते हैं। (ज्ञा)न सागर, सुख का सागर है। बरोबर वो आकर अपनी मत देते हैं। उनकी है श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मत। (गी)ता में भी है, श्रीमत से नर से ना॰ बने थे; परन्तु आगे माया ने बुद्धि का ताला एकदम बन्द कर दिया (था)। गॉडरेज़ का ताला पक्का होता है ना। तो ऐसा ताला लगा हुआ था। जो देवताएँ थे वो अभी बिल्कुल (त)मोप्रधान बन गए हैं, तभी तो भारत कंगाल है ना! कितना कर्जा उठाते, भीख मांगते हैं। कमज़ोर हो ...वा है ना। बाप समझाते हैं यह ड्रामा बना हुआ है। इस राज़ को तुम बच्चे ही जानते हो। सो भी अबलाएँ (ए)कदम अ(न)पढ़, जो कुछ न जानती थीं। कोई हिस्ट्री–जाग्राफी का पता न था। जैसे छोटे बच्चे को कुछ ... पता नहीं रहता है ना। बाबा भी कहते हैं यह कुछ नहीं जानते, जैसे छोटे बच्चे हैं; परन्तु अपन को (स)मझते बड़ा है बहुत। पढ़े–लिखे साहुकार लोगों को अपना अहंकार होने कारण ज्ञान को उठाते नहीं। अपने मर्तबे का नशा है। वो फिर वाइलेंस में मदद करने वाले हैं। वास्तव में गांधी कौरवपति वा काँग्रेसपति था, वो भी नॉन वाइलेंस चाहता था। गीता है ही नॉन वाइलेंस की निशानी। और सभी शास्त्रों में लड़ाइयाँ आदि दिखाई है। गीता में वाइलेंस की बात नहीं है; परन्तु उन्होंने इसमें भी कुछ डाल दिया है। (फि)र भी गांधी की बुद्धि में था कि नॉन वाइलेंस रामराज्य हो। ज़रूर समझते थे रावण राज्य है; इस(लि)ए रामराज्य स्वर्ग चाहते थे। नई दुनिया, नया भारत रामराज्य हो; परन्तु यह तो भगवान का ही (का)म है, जो स्वर्ग नई दुनिया स्थापन करे। मनुष्यों के हाथ न है। तो अभी तुम बच्चे बता सकते ... अभी क्या होने वाला है। भगवानुवाच्य है। भगवान हमको पढ़ाते हैं। कितने नए2 आते हैं उन्हों (को) समझाया जाता है कैसे अब नई दुनिया की स्थापना हो रही है। भक्ति करते ही हैं बाप से मिलने (लि)ए। (मिल)कर क्या करेंगे? बच्चे को बाप से क्या मिल(ता) है? वर्सा। बाप न कहने से मज़ा ही न .....। भगवान बाप आते हैं तो ज़रूर कुछ उनसे वर्सा मिलेगा। बाप है ना। भारत में गाते भी हैं

(तु)म मात–पिता.....सुख घनेरी अर्थात हीरे जैसा जन्म मिलेगा। हीरे जैसा जन्म है ही देवताओं का। असुरों का है कौड़ी जैसा जन्म। ठोकरे खाते रहते हैं। मरते रहते हैं। सतयुग में तो पूरी 125 बरस आयु (हो)ने बाद फिर मरते हैं। यहाँ तो मछरों मुआफिक मरने हैं। बाबा कहते हैं अभी यह ड्रामा पूरा होना है। (अ)भी तुम बच्चों को थकना न है। ज्ञान का घृत डालते रहो। वो लोग दीवा में घृत डालते हैं। (बा)बा हम आत्माओं को बहुत घृत देते हैं जिसको धारण करना है, बुद्धि में भरना है। बाबा तो घृत देते हैं। बाकी धारण करना यह तुम बच्चों का काम है। जिनकी तकदीर में न है तो पुरुषार्थ पर चलता (न)हीं। कितना भी भगवान समझाते तो भी उनकी मत पर न चलते। नॉलेज तो बहुत सहज है। जैसे छोटे (ब)च्चों को बताया जाता है यह हाथी–घोड़ा हैं। वैसे इन चित्रों पर कितना सहज रीति समझाया जाता है। (य)ह तुम्हारा ऊँच ते ऊँच बाप है। वो खुद कह रहे हैं– मेरे लाडले बच्चे, मैं तुम्हारा ऊँच ते ऊँच बाप हूँ। (मु)झे याद करो तो मैं तुमको ऊँच ते ऊँच पद दूँगा। पद का सा॰ भी कराते हैं। बरोबर नर से ना॰, नारी से लक्ष्मी (ब)नाते हैं। सिर्फ बाबा को याद करने की बात है। घर बैठे,खाते,पीते,बोलते याद करना है। बहुत सहज है। और कोई बात ही नहीं कहते। अच्छा, डीटेल पढ़ न सकते हो, सिर्फ मुझे याद करो और स्वर्ग को याद करो। बस। कितनी सहज ऊँच ते ऊँच पढ़ाई है। बाप को याद करने में थक न जाओ। स्वीट (ब)ाप को याद करो। मेरे को याद करो तो मैं गारंटी करता हूँ तुम मेरे पास चले आवेंगे। मेरे लाडले बच्चे, सिर्फ मुझ परमधाम में रहने वाले पारलौकिक परमपिता प॰ को याद करो। यह घृत है। तुम्हारी (अ)ात्मा में ताकत आ जावेगी। मेरे स्वीट होम में आ जावेंगे; क्योंकि अभी ड्रामा पूरा हुआ है। फिर हम (तु)मको स्वर्ग में भेज देंगे। जो याद करेंगे उनका बरतन प्योर होता जावेगा। ज्ञान की धारणा भी होगी। कितना सहज है। रात को जागकर याद करने से विकर्म विनाश होंगे। भक्ति तो आधाकल्प की है। (अ)भी बाबा एक सेकण्ड में जीवनमुक्ति देते हैं। जीवन मुक्ति मिलती ही देवताओं को है। वास्तव में तो सभी की जीवन को मुक्त करते हैं माया से। सभी अपने2 समय पर अपना पार्ट (ब)जाने आवेंगे। गोल्डन एज में आवेंगे गोया सभी को जीवनमुक्ति अर्थात जीवात्मा को माया के (बं)धन से मुक्त करते हैं। बाकी सभी कोई स्वर्ग में नहीं आवेंगे। उनको तो अपने2 समय पर (अ)ाना है। हूबहू ड्रामा रिपीट होगा। सभी स्वर्ग में थोड़े ही आवेंगे। अभी बाबा सभी को माया के (बंध)न से लिबरेट करते हैं। नाम ही है लिबरेटर। रावण को जलाते भी भारत में ही है। राम–सीता आदि की कथा भी यहाँ ही सुनाते हैं। इस समय सभी सीताएँ ब्राइड्स हैं। वो एक है ब्राइडग्रुम। सभी को प॰ गाइड आकर वापिस अपने घर ले जाते हैं। बाबा कहते हैं मनमनाभव। लाडले बच्चे, तुम नंगे आए थे। अभी यह देह–अभिमान छोड़ शिवबाबा को याद करो तो (तु)म स्वर्ग के मालिक बनोगे। फर्स्ट क्लास वर देते हैं। बाकी क्या चाहिए! स्वर्ग का बहुतों को (स)ा॰ भी होता है। भक्तिमार्ग में ऐसे कोई बिरला नौधा भक्ति करते हैं तभी सा॰ होता। एक ही (मी)रा का नाम है। यहाँ तो ढेर घर बैठे सा॰ करते रहते हैं। बाकी मेहनत है याद करने की। (बा)बा अपना अनुभव भी बतलाते हैं, याद करना भूल जाता हूँ। यह भी जानते हैं, अगर अस्थायी याद रहें तो फिर कर्मातीत बन जावें। फिर यह शरीर छोड़ नया शरीर लेना पड़े। मेहनत ही इसमें है। (शि)व बाबा को याद करना है और बाप के वर्से को याद करना है। शिवपुरी को याद करो और (वि)ष्णुपुरी का राज्य लो। ऐसा वर कोई दे न सके। कितना सहज है; परन्तु फिर भी भूल जाते हैं। (स)मझाने में भी बहुत सहज है। इसमें किताब आदि कुछ भी नहीं है। यह चित्र कितने सहज है।

अजुन बहुत बनेंगे। कपड़े पर, टिन पर भी छपने हैं; परंतु फिर भी यह ज्ञान यहां ही खत्म हो जावेगा। निकलेंगे फिर भी वो ही गीता–भागवत, जिसके लिए प॰ कहते हैं– यह सभी भक्तिमार्ग के मसाले हैं। इनसे कोई मेरे को नहीं पाते। फिर जब मैं आकर ज्ञान दिऊँ(दूँ) वो गीता शास्त्र सुनाने वाले कोई भगवान तो नहीं हैं ना। हम फिर इसी नाम–रूप, देश–काल में आए हैं। जो कल्प पहले थे वो ही आते रहेंगे। कितनी बच्चियाँ कहां–2 बैठे याद करती रहती हैं। बाबा को कब देखा भी नहीं है तो भी लिखती हैं, बाबा हम आपकी हो चुकी हूँ। कुछ भी हो जावेगा आपका हाथ कब न छोडूँगी। सिर्फ शिवबाबा को याद करते रहो तो भी विकर्म विनाश होते जावेंगे। हम जानते हैं, बरोबर हम पापात्मा बन गये थे, अभी बिल्कुल पुण्यात्मा बनना है। कैसे? बस, शिवबाबा को याद करो। चित्रों में भी क्लीयर है यह बी॰के॰ ... शिवबाबा को याद कर रहे हैं। यहां पूजा की तो बात ही नहीं। कितनी सहज बात है। ड्रामा भी जान गए अब फिर बाबा आया है हम सतयुग में चलते हैं। बाबा कहते हैं, मैं सुनाता भी उन्हों को जिन्हों को कल्प पहले सुनाया था। सेकेण्ड–2 जो पास होता है, समझो हमारी राजधानी स्थापन होती जाती है। बच्चे कलियों से फूल बनते जाते हैं। कलियां प्रजा बनेंगी। फूल जो बनेंगे वो राज्य–भाग्य लेंगे। बाकी काँटे तो आसुरी सम्प्रदाय ठहरे। कोई तो बहुत अच्छे–2 फूल आते हैं। फूलों से ही खुशबूएँ आवेंगी। ....खड़ी से इतना मज़ा नहीं आवेगा जितना फूल से। यह भी ज्ञान की खुशबू है। अच्छा, दिलवाला मन्दिर में तुम सभी का पूरा यादगार है। तुम कहेंगे– आदि देव–आदि देवी, कुवाँरी कन्या, अधर कन्या सभी के 84 जन्मों की हम बायोग्राफी बता सकते हैं। 5000वर्ष में उन्होंने 84जन्म कैसे लिये हम बतला सकते हैं। बाबा ल॰ना॰ का चित्र बनवा रहा है। रात–दिन यही ....लता रहता ल॰ना॰ का चित्र ऐसे बनाऊँ। ल॰ना॰ के बीच में त्रिमूर्ति भी ज़रूर हो। उनमें लिखत भी .... हो और नीचे में यह ज़रूर लिखना है– सतयुगी डिटी वर्ल्ड सावरन्टी इज़ योर गॉड फादर भी थे राइट। बाबा ने कई बार समझाया है त्रिमूर्ति के नीचे लिखत और यह लाइन ज़रूर हो; परंतु .... भी पता नहीं क्या–2 छपाते रहते हैं। पुराना चित्र ही डालते रहते हैं। बाबा तो कहे त्रिमूर्ति और .... में समझा.... बड़ी एवसेलेंट है। गीता का एपिसोड बरोबर फिर से रिपीट हो रहा है। अच्छा।

बापदादा मीठी–2 मम्मा का पुरुषार्थी बच्चों प्रति गुडमॉर्निंग।

ॐ रात्रि क्लास:– ..... ड्रामा पर बड़ा युक्ति से एकरस चलना है। जो बात पास्ट हो गई फिर मुख से न निकलना चाहिए। ..... न होता तो ... यह भी भूल है। कोई फिर विकार में जाते हैं तो कहते हैं, ड्रामा में था; परंतु घड़ी–2 ऐसे न कहना है ना रजिस्टर खराब हो पड़ेगा। मोचरा भी खावेंगे, पद भी भ्रष्ट होगा। ड्रामा में था ऐसे कहकर खुश थोड़े ही होना चाहिए। कोई भी भूल हो जाए तो दो/चार रोज़ भोजन भी न खाना चाहिए। व्रत रखना चाहिए। जब कोई ऐसा पाप हो जाये, कोई को क्रोध किया वा मारा तो एक रोज़ उपवास रखना चाहिए। शिवबाबा को याद करना चाहिए। बाबा मेरे से भूल हुई। आपसे क्षमा भी मांगता हूँ और उपवास भी रखता हूँ। तो बाबा समझे यह पश्चाताप करते हैं। अच्छा। ॐ

रात्रि क्लास 21/11/62 तुम दुनिया के लिए हो सैम्पल। बाबा ऐसा फर्स्ट क्लास बनाते, जो तुम कोई से भी बात करो तो कहेंगे, तुम किसके बच्चे हो? शिवबाबा के। उनकी श्रीमत मिलती है तभी तुम ऐसी मीठी बात करते हो। ऐसा सर्विसएबुल बनना चाहिए। यह है रूहानी सर्विस। दुख–सुख रूह को महसूस होता है। दुनिया कहती है आत्मा दुख–सुख से न्यारी, ... बाबा कहते हैं मैं आत्मा को ही शरीर धारण कराए, प्रूफ दे और फिर सज़ा देता हूँ। ॐ